*Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed*
*Multidisciplinary Journal*
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

# अनूपपुर जिले के दर्शनीय पर्यटन स्थल : एक भौगोलिक अध्ययन

शोध–निर्देशक
**डॉ. बी.पी. सिंह**
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग)
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी
**प्रतिभा पाण्डेय**
शोध छात्रा

## परिचय–

मध्यप्रदेश राज्य के अनूपपुर जिले का गठन वर्ष 2003 में किया गया। यह जिल शहडोल जिले के अनूपपुर, कोतमा पुष्पराजगढ़ एवं जैतहरी तहसील को मिलाकर बनाया गया है। वर्तमान में यह जिजा शहडोल संभाग के अंतर्गत आता है। जिले की भौगोलिक स्थिति $23^0.10$ उत्तरी अक्षांश से $23^0.36$ उत्तरी अक्षांश तक एवं $81^0.40$ पूर्वी देशांश से $82^0.10$ पूर्वी देशांतर तक है। जिले का जल क्षेत्रफल 3746.71 वर्ग किमी. है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार यहां क कुल जनसंख्या 749237 है। जिले में 206 गाँव एवं 282 ग्राम पंचायते है। इस जिले के अमरकंटक नामक स्थल से तीन पवित्र नदियों का उद्‌गम होता है। पुण्य सलिला पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होते हुए अरब सागर में समाहित हो जाता है। सोन मूडा से पवित्र नदी सोन पूर्वमुश्वी होकर बिहार में गंगा नदी में समाहित हो जाती है। तीसरी नदी जोहिला सोन की सहायक नदी है। तीन नदियों का उद्‌गम स्थल अमरकंटक अपनी धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व विख्यात है।

## शोध का उद्‌देश्य–

प्रस्तुत पत्र निम्नलिखित उद्‌देश्यों पर आधारित है–

1. अनूपपुर जिले प्रमुख पर्यटन केन्द्रों की पहचान करना।
2. अनूपपुर जिले के पर्यटन आकर्षण को प्रस्तुत करना।
3. पर्यटन विकास की बाधाओं का पता लगाना एवं भारी विकास के लिए रणनीति प्रस्तुत करना।

## शोध विधि तंत्र–

प्रस्तुत शोध पत्र में आँकड़ों एवं तथ्यों का संग्रहण में प्राथमिक एसवं द्वितीयक विधि को प्रयोग में लाया गया है। द्वितीयक विधि से पर्यटन सम्बंधित प्रकाशित आँकड़ों का संग्रहण किया गया है तथा प्राथमिक

विधि में अवलोकन साक्षात्कार विधि से प्रयोग में लगया गया है। प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेशण कर निष्कर्ष बिन्दु प्राप्त किये गये है।

## शोध परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है :–

1. अनूपपुर जिले की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटन विकास की संभावनाओं को बलवती बनाती है।
2. अनूपपुर जिला प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन आकर्षण से भरा है।
3. जिले के पर्यटन विकास में कई बाधाये एवं चुनौतियां है जिन्हें दूर कर पर्यटन विकास किया जा सकता है।

## अनूपपुर जिले में पर्यटन–

अनूपपुर जिले में पर्यटन के कई प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वन्य जीव पर आधारित एवं जनजातीय लोक संस्कृति पर आधारित पर्यटन स्थल है। यहां का अमरकंटक स्थल सबसे प्रमुख है जो अपने प्राकृतिक सौन्दर्य सोन, नर्मदा एवं जोहिला जैसी पवित्र नदियों के उद्‌गम स्थल होने का गौरव प्राप्त है। यहां के मंदिर प्राकृतिक झरने और बाग–बगीचे यहां आने वालों को मंत्र मुग्धकर लेते है। यह स्थल के आदिकाल से ऋषियों, मुनियों तपस्वियों की सिद्ध भूमि रहा है। यहां पर पर्यटक आकर असीम सौन्दर्य एवं सुख की प्राप्ति करते है। यह की प्रकृति मनमोहक एवं आनन्द देने वाली है। विभिन्न प्रजाति के वनस्पति, जीव–जन्तु एवं पक्षियों के कलख से यह क्षेत्र भरा पड़ा है। यहां के प्रमुख आकर्षण को तालिका क्रमांक–1 में दिखाया गया है।

## अनूपपुर जिले के प्रमुख पर्यटन आकर्षण–

अनूपपुर जिला स्थित अमरकंटक स्थल अपनी प्राकृतिक द्वारा धार्मिक महत्व के कारण पूरे प्रदेश के लोगों का आकर्षण केन्द्र है। यहां के प्रमुख पर्यटन स्थलों को सारणी क्रमांक–1 में दिखाया गया है।

**सारणी क्रमांक–1**

**अनूपपुर जिले के प्रमुख पर्यटन केन्द्र एवं आकर्षण**

| क्रं. | पर्यटन केन्द्र का नाम | प्रमुख स्थल से दूरी | प्रमुख आकर्षण |
|---|---|---|---|

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अमरकंटक | 00 कि.मी. | पवित्र नदियों का उद्गम नर्मदा कुंड, सोन मूड़ा, माई की बगिया आदि। |
| 2. | माँ नर्मदा उद्गम केन्द्र | 00 कि.मी. | कुंड का अनुपम दृश्य, छोटे–छोटे मंदिरों का अनुपम दृश्य, नर्मदा कुंड। |
| 3. | कल्चुरी कालीन मंदिर | 03 कि.मी. | कर्ण मंदिर मच्छेन्द्रनाथ मंदिर पातेलेश्वर मंदिर केशव नारायन मंदिरों की वास्तुकला एवं सौन्दर्य। |
| 4. | माई की बगिया | 01 कि.मी. | सुन्दर फूलों एवं फलों का बगीचा |
| 5. | सोनमूड़ा अमरकंटक | 1.50 कि.मी. | सोन व भद्र नदियों का उद्गम दोनों का संगम कुंड का अनुपम दृश्य। |
| 6. | कपिल धारा प्रताप | 06 कि.मी. | नर्मदा नदी का पहला प्रपात, सुरम्य वातावरण हरी–भरी वादियां, प्रपात का सौन्दर्य। |
| 7. | दुग्ध धारा प्रताप | 07 कि.मी. | पानी का रंग दूध जैसा सुरम्य प्रपात। |
| 8. | श्री जालेश्वर मंदिर | 08 कि.मी. | जोहिला नदी की उत्पत्ति सुन्दर प्रकृति दृश्य। |
| 9. | श्री जैन मंदिर | 00 कि.मी. | विशाल मंदिर, लाल पत्थरों पर उभरी नकांशी 24 टन की प्रतिमा। |
| 10. | श्री यंत्र महामेरू मंदिर | 01 कि.मी. | विशाल मंदिर अनुपम सौन्दर्य यंत्र आकार की आकृति, सैलानियों का आकर्षण केन्द्र। |
| 11. | श्री अमरेश्वर मंदिर | 10 कि.मी. | विशाल शिवलिंग, शिवलिंग का वनज 51 टन, सीढ़ियों पर चढ़कर अभिषेक करने का दृश्य। |

**स्त्रोत :–** व्यक्गित सर्वेक्षण।

अनूपपुर जिले में अमरकंटक तथा अमरकंटक के आसपास के सुरम्य पर्यटन केन्द्रों का आकर्षण सारणी क्रमांक–1 में दिया गया है। इसके अतिरिक्त अनूपपुर जिले में कई पर्यटन स्थल हैं। जिनको सारणी क्रमांक–2 में दर्शाया गया है–

**सारणी क्रमांक–2**

**अनूपपुर जिले के अन्य पर्यटन केन्द्र**

| क्रं. | पर्यटन केन्द्र का नाम | प्रमुख स्थल से दूरी | प्रमुख आकर्षण |
|---|---|---|---|
| 1. | सिलहरा की गुफायें | 40 कि.मी. | सुरम्या प्राचीन गुफाये, केवई नदी की जल धारायें, लाल बलुआ पत्थर से निर्मित सीढ़िया, कुंड, स्थानागार का दृश्य |
| 2. | चचाई बांध | 07 कि.मी. | सुथना नदी पर निर्मित, 28 वर्ग कि.मी. में विस्तृत, सुन्दर मनमोहक अमरकंटक ताप विद्युत केन्द्र। |
| 3. | स्वयंमू गणेश जी छरहर कला | 35 कि.मी. | घने जंगल के बीच, अनुपम सौन्दर्य प्रतिमा का वदना (मान्यता है)। |
| 4. | जल प्रपात छरहर कला | 37 कि.मी. | सुरम्य जल प्रपात, मंदिर वन्य जीव एवं वनस्पति। |
| 5. | कोडर वाट फाल | 78 कि.मी. | कन–कन फाल, जोहिला नदी पर निर्मित, मिनी नियाग्रा। |
| 6. | तुम्मी बड़ी | 75 कि.मी. | सुन्दर स्थली, तुम्मी वाटर फाल। |

**स्त्रोत :–** व्यक्गित सर्वेक्षण।

## 1. अमरकंटक–

अमरकंटक म0प्र0 के अनूपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ तहसील में स्थित बहुत ही सुन्दर पवित्र और शान्त स्थान है। अमरकंटक से ही माँ नर्मदा का उद्गम हुआ है। अमरकंटक में पवित्र नर्मदा न दी के साथ–साथ सोन नदी और जोहिला नदी का भी उद्गम स्थल है। माँ नर्मदा को भगवान शिव की पुत्री माना जाता है। अमरकंटक को भगवान शिव, कपिल मुनि दुर्वासा ऋषि की तपोभूमि भी कहा जाता है। अमरकंटक

अपनी धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिये भी विश्व विख्यात है। अमरकंटक में घूमने के लिये कई धार्मिक और प्राकृतिक स्थल है– आइये जानते हैं इनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में–

## 2. माँ नर्मदा उद्गम कुंड (स्थल)–

अमरकंटक में पवित्र नर्मदा का उद्गम स्थल है यहाँ माँ नर्मदा की उत्पत्ति एक कुंड से हुई है। कहा जाता है कि पहले नर्मदा की धारा की बॉस के झुण्ड निकलती थी बाद में हजारों साल पहले रेवा शंकर ने इस स्थान पर एक कुंड का निर्माण करवाया। इसके पश्चात् नागपुर के भोंसले राजाओं और इंदौर की रानी अहिल्या बाई ने कुंड का जीर्णोद्वार करवाया और कुछ मंदिर बनवाये। रीवा के राजा गुलाब सिंह ने माँ नर्मदा के कंड के चारों तरफ परिसर बनवाये। परिसर के अंदर माँ नर्मदा का मुख्य मंदिर है, जिसमें काले पत्थर से निर्मित माँ नर्मदा की प्रतिमा है माँ नर्मदा के मंदिर के साथ–साथ यहाँ 24 अन्य छोटे–बड़े मंदिर हैं, जिनमे राम जानकी मंदिर, शिव परिवार, दुर्गा माता मंदिर व अन्य मंदिर है।

## 3. कल्चुरी कालीन मंदिर अमरकंटक–

कल्चुरी कालीन इन मंदिरों का निर्माण कल्चुरी नरेश कर्णदेव 11वीं शताब्दी में करवाया था। ये मंदिर नर्मदा कुंड के समीप हैं। यहां कल्चुरी कालीन मंदिरों का समूह है इनमें प्रमुख है, कर्ण मंदिर, मच्छेन्द्रनाथ मंदिर, पातालेश्वर मंदिर, केशव नारायण मंदिर प्रमुख है। यहां के अधिकाशं मंदिर शिव मंदिर हैं। इसी परिसर में एक जल कुंड भी है जिसे सूर्य कुंड कहा जाता है कि इसे शंकराचार्य जी ने बनवाया था। इन सभी मंदिरों की देखरेख पुरातत्व विभग करता है।

## 4. माई की बगिया अमरकंटक–

अमरकंटक में नर्मदा उद्गम कुंड से 1 किलोमीटर की दूरी पर माई की बगिया नामक स्थान है। यहां सुंदर फूलों और फलों के पेड–पौधें लगे है। माई की बगिया में गुलबाकावली के पौधे पाये जाते है, जिससे नेत्र रोगों के लिए औषधि बनाई जाती है। पुराणों में कहा गया है कि बचपन में गुलबाकावली माँ नर्मदा की सहेली थी।

## 5. सोनमुड़ा अमरकंटक–

सोनमुड़ा सोन नदी और भद्र नदी का उद्गम स्थल है ये दोनों नदियां अपने उद्गम स्थल से कुछ ही दूरी पर मिल जाती है और सोन–भद्र कहलाती है। सोन–भद्र उद्गम स्थल से कुछ ही दूरी पर लगभग

100 फीट का झरना बनाती है। सोन मुड़ा नर्मदा उद्गम स्थल से 1.5 किलोमीटर दूर है। यह स्थान अपने अद्भुत सौन्दर्य के कारण भी जाना जाता है।

### 6. कपिलधारा प्रपात अमरकंटक–

कपिल धारा जलप्रपात नर्मदा उद्गम स्थल से 6 किलोमीटर दूर है यह माँ नर्मदा अपना पहला जलप्रपात बनाती है। झरने की ऊँचाई 100 फीट है। यह स्थान कपिल मुनि की तपोभूमि रहा है पास में ही कपिल मुनि का आश्रम और मंदिर भी है।

### 7. दूधधारा प्रपात अमरकंटक–

कपिल धारा से नीचे की ओर जाने पर माँ नर्मदा का दूसरा जलप्रपात है। यहां का नर्मदा जल झरने से गिरने के बाद दूर के समान दिखलाई देती है इसीलिये इसे दूधधारा जल प्रपात कहा जाता है। यह स्थान दुर्वासा ऋषि की तपोभूमि रहा है।

### 8. श्री जालेश्वर मंदिर अमरकंटक–

यह मंदिर अमरकंटक से शहडोल रोड पर 5 किलोमीटर म0प्र0 और छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित है। इसी स्थान से जोहिला की उत्पत्ति हुई है। यहां भगवान शिव का सुन्दर मंदिर है माना जाता है कि यहां स्थित शिवलिंग स्वयं भगवान शिव ने स्थापित किया था।

### 9. जैन मंदिर अमरकंटक–

अमरकंटक में विशाल जैन मंदिर है जिसे सर्वोदय जैन मंदिर कहा जाता है। मंदिर का निर्मा लाल पत्थरों से किया जाता है। मंदिर के गर्भ गृह में भगवान आदिनाथ 24 टन की प्रतिमा 17 तन के कमल सिंघासन पर विराजमान है। इस प्रकार प्रतिमा और कमल सिंघासन का कुल वनज 41 टन है। मंदिर अभी निर्माणाधीन है।

### 10. श्री यंत्र महामेरू मंदिर–

अमरकंटक का श्रीयंत्र महामेरू मंदिर नर्मदा कुंड से 1 किलोमीटर दूर स्थित है, यह घने जंगलों से घिरा है। मंदिर की आकृति श्रीयंत्र जैसी है, इसका निर्माण भी विशेष महुर्त में किया गया है। यह बहुत ही सुन्दर मंदिर है, यहां सेलानियों को एक बार अवश्य जाना चाहिये।

11. **अमरेश्वर महादेव मंदिर–**

यह मंदिर अमरकंटक से 10 किलोमीटर दूर म0प्र0 और छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित है। मंदिर का अधिकांश भाग छत्तीसगढ़ की सीमा के अंदर है। यहां विशाल शिवलिंग है जिसकी ऊँचाई 11 फीट है और शिवलिंग का वजन 51 टन है। इस शिवलिंग पर अभिषेक करने के लिए सीढियां लगे गई हैं। शिवलिंग को ओमकारेश्वर से और जलहरी को कटनी से लाया गया है।

## अनूपपुर जिले के अन्य पर्यटन स्थल–

### चचाई बांध और अमरकंटक थर्मल पॉवर अनूपपुर–

चचाई बांध अनूपपुर जिला मुख्यालय से 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मानव निर्मित बाँध है। चचाई बांध सुथना नदी पर बनाया गया है। डैम में पानी कम होने पर सोन नदि से सुथना नद में पाईप लाइन के माध्यम से पानी भेजा जाता है। चचाई बांध लगभग 700 एकड़ में फैला है। चचाई बांध के आसपास का दृश्य बहुत ही सुन्दर और मनमोहक है। चचाई बांध से लगी हुई अमरकंटक ताप परियोजना है जो मध्यप्रदेश की बड़ी ताप परियोजनाओं में से एक है। अमरकंटक ताप परियोजना की पहली इकाई मार्च 1977 अस्तित्व में आई। अमरकंटक ताप परियोजना को पानी की पूर्ति इसी चचाई बांध से ही होती है।

### स्वयंभू गणेश जी धरहर कला अनूपपुर–

अमरकंटक से 35 किलोमीटर दूर राजेन्द्रग्राम (पुष्पराजगढ़) तहसील मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर धरहर कला गाँव के पास जंगल में गणेश जी प्राचीन प्रतिमा है जो लगातार बढ़ रही है। कहा जाता है कि पहले प्रतिमा की ऊँचाई एक फुट थी जो अब 11 फुट हो गई है। मान्यता है कि यहाँ भक्तों की मांगी गई हर मनोकामना पूरी होती है। इसीलिये यहाँ दूर–दूर से लोग आते हैं। पहले इस स्थान पर गणेश जी की मूर्ति खुले आसमान के नीचे थी बाद में मंदिर बनाया गया है। गणेश जी के मंदिर के पास कल्चुरी कालीन प्राचीन मंदिर है जो अब पूरी तरह जर्जर हो चुका है। मंदिर के पास में भगवान ब्रम्हा, विष्णु और शिव की प्राचीन मूर्तिया भी है। मंदिर के पास ही मैं गौरी कुंड और गौरी गुफा है। मंदिर की देख रेखा साधु संत करते हैं। बसंत पंचमी को यहां विशाल मेला भरता है। यह मंदिर घने जंगलों से घिरा है।

### जलप्रपात धरहर कला (बहगड़ नाला) अनूपपुर–

धरहर कला गणेश मंदिर से लगभरग 2 किलोमीटर दूर छोटी नदी पर कुछ बहुत ही खुबसूरत जलप्रपात है। मंदिर से यहां तक पैदल ही जाना पड़ता है और रास्ता बहुत ही ऊबड़ खाबड़ और खतरनाक

है जिसमें पहाड़ियों के बीच से छोटी–छोटी पगडंडियों से जाना पड़ता है। प्रकृति की गोद में स्थित यह झरना बहुत ही सुन्दर और आकर्षण है यहां का शांत वातावरण और हरियाली सैलानियों को मंत्र–मुग्ध कर देती है।

## तुम्मी बड़ी अनूपपुर–

अनूपपुर उमरिया जिले की सीमा पर अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील के अंतर्गत बड़ी तुम्मी नामक बहुत ही खुबसूरत स्थान है। यह स्थान घुनघुती की पहाड़ियों के बीच बांधवगढ़ उद्यान के अंतर्गत आता है। यहां की ऊँची नीची पहाड़ियां और प्रकृति की सुन्दरता सैलानयों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां उगते और डूबते सूरज को देखने के लिए दूर–दूर छोटी तुम्मी वॉटरफॉल है यह उमरिया जिले के अंतर्गत आता है। बड़ी तुम्मी शहडोल से लगभग 27 किलोमीटर और अनूपपुर से 75 किलोमीटर दूर है।

## पर्यटन विकास की चुनौतियाँ–

अनूपपुर जिला पर्यटन संसाधनों से भरा एक आदर्श पर्यटन स्थल की संभवनाओं से परिपूर्ण है। उपरोक्त पर्यटन आकर्षण विद्यमान होने के बाद भी यह पर्यटन केन्द्र केवल धार्मिक पर्यटकों को ही आकर्षित कर पा रहा है। यहां पर विदेशी पर्यटकां का आगमन सीमित संख्या में है। जबकि विदेशी पर्यटकों के स्तर के पर्यटन आकर्षण विद्यामान है। यहां पर विदेशी पर्यटकों के कम आगमन का प्रमुख कारण आरामदायक व तीव्रगामी परिवहन साधनों का आभाव एवं पर्यटन केन्द्र में पर्यटकों के लिये आधारभूत बुनियादी सुविधाओं का आभाव प्रमुख समस्या रही है। इसके साथ–साथ प्रशिक्षित टूरिस्ट गाइड, टूरिस्ट अपरेटर की कमी, प्रचार–प्रसार का आभाव पेशेवर साथियों की कमी, विदेशी पर्यटकों के लिय खान–पान सुविधाओं का आभाव पर्यटन विकास के लिये बड़ी चुनौती है।

## निष्कर्ष–

अनूपपुर जिला एक पिछड़ आदिवासी जिला है। यहां पर्यटन जैसे गतिविधि को बढ़ावा देकर, तथा स्थानीय लोगों को जोड़कर इनकी सांस्कृतिक विरासत को पेशेवर ढंग से प्रस्तुत कर पर्यटन को बढावा दिया जा सकता है। आवश्यकता यह है कि सर्वप्रथम यहां पर्यटन विकास की आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जा एवं यहां के पर्यटन आकर्षण को इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से प्रचार–प्रसार कर पर्यटकों को आकर्षित किया जाय। अधोसंरचना के विकास में पब्लिक–प्राइवेट पार्टनर शिप (PPP) के माध्यम से इस क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं को विकसित कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है, और क्षेत्र में फैली गरीबी और बेरोजगारी से कई हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

## संदर्भ–

1. सिंह बी0पी0 एवं सिंह सुमन्त (2005) मध्यप्रदेश में पर्यटन आदित्य प्रकाशन बीना।
2. अनुरागी आर0बी0 (2011) बघेलखण्ड में पर्यटन विकास की समस्यायें एवं संभावनाये, अप्रकाशित शोध प्रबंध, अ. प्र. सिंह विश्व विद्यालय रीवा।
3. भारत को अमरकंटक में विरासत और पर्यटन, सबमिटेड टू अर्वन एडमिनिस्ट्रेसन एण्ड डेवलपमेन्ट डिपार्टमेन्ट (म0प्र0)
4. पटेल, सविता (2024) शहडोल संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की संभावनाये, एक भौगोलिक विश्लेषण, उ0प्र0 शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह विश्व विद्यालय रीवा।
5. सिंह बी0पी0 एण्ड पटेल सविता (2022) शहडोल संभाव में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव, प्रकाशन शोध पत्र